कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 3 खंड: 3 मार्च 15–21, 2015

संस्थान की अनुसंधान समिति बैठक (2015)

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्तान, नागपुर में संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक दि. 17.3.2015 से दि.19.3.2015 तक डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर की अध्यक्षता में हुई । उन्होंने बैठक को अपनी परिचायात्मक टिप्पणी द्वारा प्रारंभ किया । डॉ. एम.वी.वेणुगोपालन, प्रधान, पी.एम.ई ने आर.ए.सी की सिफारिशों को प्रस्तुत किया । डॉ. विनिता घोटमारे, नोडेल अधिकारी, आर.एफ.डी ने वर्ष 2013-14 के अनुसंधान दस्तावेजों के रुपरेखा का विवरण दिया । डॉ. वी.एस.नगरारे, सचिव, आय.आर.सी. ने वर्ष 2013-14 के आय.आर.सी की कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत किया । डॉ.संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. डी.ब्लैस, प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. सुमन बाला सिंग, प्रभारी प्रधान, फसल सुधार विभाग, डॉ. डी.मोंगा, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा, डॉ. अ.हि.प्रकाश, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबत्तूर इसमें उपस्थित थे । के.क.अ.सं, नागपुर, सिर्सा एवं कोयंबत्तूर के सभी वैज्ञानिकों ने उनके शोध के निष्कर्षों प्रस्तुत किया एवं परिणामों पर चर्चा की गई । प्रत्येक परियोजना के तकनीकी कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया । डॉ.के.आर.क्रांति, अध्यक्ष, आय.आर.सी द्वारा समापन भाषण दिया गया । श्री.मुच्ली, तकनीकी अधिकारी (टि-5) को आई.आर.सी के वर्षों में आयोजित बैठकों के लिए एवं उनके इस वर्ष सेवानिवृत्ति होने के दौरान अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया था । डॉ.जे.एच.मेश्रम, संयुक्त सचिव, आय.आर.सी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया ।

वैज्ञानिक साहित्य का विश्लेषण

कपास की लुप्तप्राय करीबी सापेक्ष-कोकिया स्प; प्रजातियों के संरक्षण में शहद लताओं की भूमिका -
कोकिया हिबिस्कुस परिवार (मालवाशिये) में चार अद्भुत प्रजातियों में से एक स्थानिक जाति है जो हवाई द्वीप में सीमित है ।

कोकिया कुकियो डेग- मोलोका का पेड कपास
कोकिया ड्रोनाराईड्स (सीम) लूटन - हवाई का पेड कपास
कोकिया क्आनीस (राक) ओ. डेग एवं डुवेल कुआई कोकिया
कोकिया लेन्सियोलेटा लूटन :वैलुपे घाटी पेड़ कपास

पहले तीन लुप्तप्राय हैं और आखिरीवाला अभी विलुप्त है
ओएहु - केवल 23 कोकिया कुकियेरी ग्राफ्टेड पौधों अब उपलब्ध हैं ।

कोकिया ड्रानाराईड्स पौधा

कोकिया ड्रानाराईड्स फूल

कोकिया ड्रानाराईड्स बीज कैप्सूल

गीसिपियम टोमेंटोसेम पौधा

गीसिपियम टोमेंटोसेम का डोडा

कोकिया स्प. फूलों की पंखुड़ियों निम्न उपयोग हेतु खेती की जाती थीं । गुलाबी और लैवेंडर रंजक, छाल के रस से मछली - नेट के लिए जलरोधक गहरे लाल डाई, (राल डाई मछली पकड़ने के जाल के जीवन को बढ़ाता है एवं पानी के नीचे लाल रंग मछली को अदृश्य करने से बेहतर मछली पकड़ को सुविधाजनक बना देता हैं), छाल मुखपाक की इलाज़ एवं फूलों लेई के लिए (पालिनेशियन से बने हए फूलों की माला)। इन चार प्रजातियों के बीच में कोकिया ड्रानाराईड्स (हवाई का पेड कपास) विगत रुप में गासिपियम के तहत रखे गये थे और गीसिपियम ड्रानाराईड्स के रूप में नीमित किए गये थे । वे कोना के लावा क्षेत्रों पर अत्यधिक सूखी पोषक तत्व समाप्त हुआ मिट्टी में अनुकूलित हैं । पत्तियां मेपल आकार के हैं । वे वसंत, ग्रीष्म एवं शुरूआती गिरावट के दौरान खिले हैं । बीज गर्मी या गिरावट में परिपक्व रहते हैं । बीज कैप्सूल तीन सहपत्र एवं पाँच पिंडक (लोब) सहित हैं । सोने का रंग एवं लाल भूरे रंग के बीज रोएँधार होते हैं एवं वे गीसिपियम टोमेंटोसेम (हवाई कपास) के समान हैं। बीज, हॉपिंग द्वीप के लिए अच्छी तरह से अनुकूल हैं; तंतुओं पानी के साथ भारी होने तक वे कई दिनों के लिए तरकर रह सकते हैं जो समुद्री बहाव द्वारा द्वीपों भर में फैलाने के लिए काफी समय है ।

प्रजाति लुप्तप्राय और विलुप्त होने के कारण

देशी अमृतवाले पक्षियों के साथ सह - विलुप्त होना- कोकिया स्प की पंखुड़ियों मुड़ हिबिस्कस फूल के समान सर्पिल के रुप में केंद्रीय घुमावदार स्टामिनेल स्तंभ सहित, ड्रेपानीडीनी परिवार के शहद लताओं घुमावदार बिल से बराबर होने हेतु डिजाईन किए गये हैं । प्रत्येक फूल में प्रचुर मात्रा के अमृत और पराग होते हैं जबकि शहत लताएँ अधिक ऊर्जा एवं प्रोटीन-युक्त भोजन से पुरस्कृत हैं । कोकिया फूलों का परागण से भविष्य हेतु जीवक्षम बीज का सुनिश्चित हो जाएगा । पालिनेशियन द्वारा उन्मूलन होने से हवाई शहद लताओं के लापता होने के साथ कुछ भी उनकी अनोखी जगह को भरने के लिए नहीं हैं । एवियन मलेरिया जैसे मच्छर वहन रोगों द्वारा बड़ी संख्या में उनकी मौत हुए (प्लास्मोडियम रेलिक्टम) एवं 19 वीं सदी में फौलबाक्स, गैर देशी स्तनधारियों द्वारा शिकार एवं गैर देशी पक्षियों से प्रतिस्पर्धाएँ द्वारा कोकिया स्प ने अपने पालिनेटार्स को खोने से शून्य या खराब बीज के परिणामस्वरूप लुप्तप्राय और विलुप्त जंगली सूची में उन्हें धक्का दिया गया ।

कोकियास और अन्य संबंधित प्रजातियों को परागण के लिए बनाया गया घुमावदार चोंच सहित हवाई शहद लता

कोकियास और अन्य संबंधित प्रजातियों को परागण के लिए बनाया गया घुमावदार चोंच सहित हवाई शहद लता लावा क्षेत्रों में शुरू की गयी जंगली घास प्रजातियों जो लावा क्षेत्र में हिचकते कोकिया विकास को आग की आवृत्ति के वृद्धि द्वारा शामिल करते हैं। 1800 के सदी में शुरू की गयी अर्बेरिली चुस्त चूहों शाखाओं से बीज तक खाने पाए गए ।

संदर्भ एवं छाया स्रोत

http://www.botany.hawaii.edu/faculty/carr/images/kok_dry_948.jpg
http://www.botany.hawaii.edu/faculty/carr/kokia.html
http://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/5/51/Kokia_drynarioides.jpg&imgrefurl=http://commons.wikimedia.org/wiki/File:Koki
a_drynarioides.jpg
http://www.arkive.org/hawaiian-cotton-tree/kokia-drynarioides/image-G60498.html
http://en.wikipedia.org/wiki/Gossypium_tomentosum
http://www.floridata.com/tracks/bruce/HI/Malvaceae26.cfm
http://www.salon.com/2012/04/02/the_evolution_of_the_hawaiian_cotton_tree/
http://nativeplants.hawaii.edu/plant/view/Kokia_drynarioides
http://dcourier.com/main.asp?SectionID=74&SubsectionID=102&ArticleID=116748

डॉ.जे.एन्नी शीबा, वैज्ञानिक, पौधा दैहिकी, के.क.अ.सं. नागपुर द्वारा योगदान

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-3, खंड-3, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com